Gupta period (Part -15)

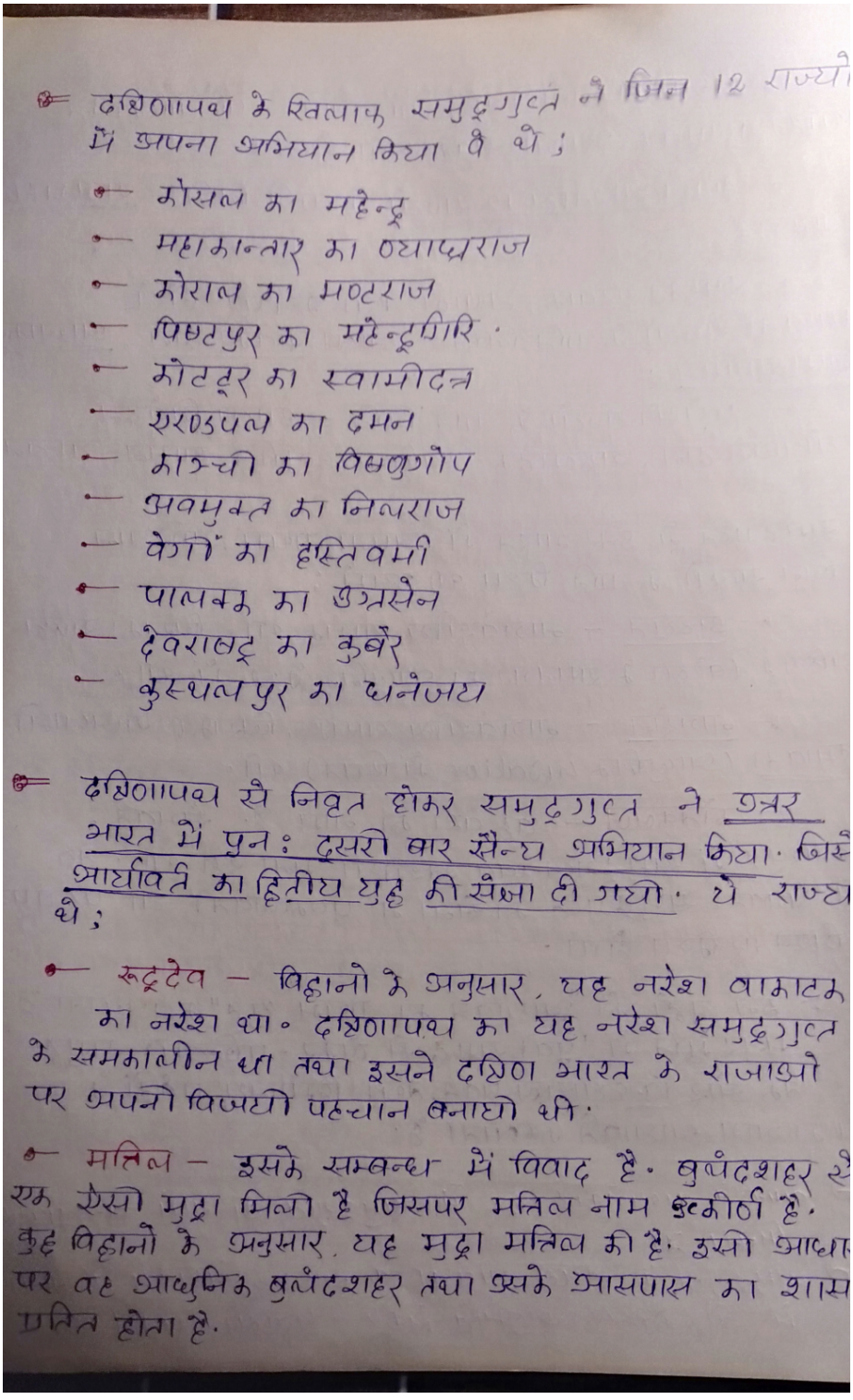

दक्षिणापथ के खिलाफ समुद्रगुप्त ने जिन 12 राज्यों में अपना अभियान किया वे थे;

- कोसल का महेन्द्र
- महाकान्तार का व्याघ्रराज
- कोराल का मण्टराज
- पिष्टपुर का महेन्द्रगिरि
- कोट्टूर का स्वामीदत्त
- एरण्डपल्ल का दमन
- काञ्ची का विष्णुगोप
- अवमुक्त का नीलराज
- वेंगी का हस्तिवर्मा
- पालक्क का उग्रसेन
- देवराष्ट्र का कुबेर
- कुस्थलपुर का धनंजय

दक्षिणापथ से निवृत होकर समुद्रगुप्त ने उत्तर भारत में पुनः दूसरी बार सैन्य अभियान किया। जिसे आर्यावर्त का द्वितीय युद्ध की संज्ञा दी गयी। ये राज्य थे;

- रूद्रदेव – विद्वानों के अनुसार, यह नरेश वाकाटक का नरेश था। दक्षिणापथ का यह नरेश समुद्रगुप्त के समकालीन था तथा इसने दक्षिण भारत के राजाओं पर अपनी विजयों पहचान बनायी थी।
- मतिल – इसके सम्बन्ध में विवाद है। बुलंदशहर से एक ऐसी मुद्रा मिली है जिसपर मतिल नाम उत्कीर्ण है। कुछ विद्वानों के अनुसार, यह मुद्रा मतिल की है। इसी आधार पर वह आधुनिक बुलंदशहर तथा उसके आसपास का शासक प्रतित होता है।

- नागदत्त - इसके सम्बन्ध में भी काफी विवाद है और उचित प्रमाणों के अभाव में नागदत्त के अधिकार क्षेत्र को निर्दिष्ट करना दुष्कर है.

- चंद्रवर्मा - चंद्रवर्मा पश्चिमी बंगाल में आधुनिक बांकुड़ा जिले के आसपास शासन करता था. इस स्थान से उत्तर-पश्चिम 12 मील की दूरी पर 'सुशुनिया' की पहाड़ी पर उत्कीर्ण एक अभिलेख में चंद्रवर्मी नामक शासक का उल्लेख हुआ है.

- गणपति नाग - पुराणों के अनुसार, विदिशा में एक विख्यात नागवंशीय शासक का शासन समकालीन समय में था. जिसमें सबसे शक्तिशाली शासक नागवंशीय नरेश गणपति नाग था. जिसके खिलाफ समुद्रगुप्त ने अपना अभियान चलाया था. इसी विजय के उपलक्ष्य में समुद्रगुप्त ने गरुतमंदक भाँति के सिक्के चलाये थे.

भारतीय धार्मिक अवधारणा के अनुसार, गरुड़ सर्पों के विनाशक थे.

- नागसेन - नागसेन ग्वालियर के समीप स्थित पद्मपवाया का नागवंशीय शासक था. जिसके विरुद्ध समुद्रगुप्त ने अभियान किया था.

- अच्युत - यह अहिच्छत्र (बरेली) का नागवंशीय नरेश था. समुद्रगुप्त इसके साथ हुए संघर्ष में जयी रहा था. समुद्रगुप्त की उपाधि 'अचिन्त्य पुरुष' यह बताता है कि वह अच्युत का उन्मूलन किये होंगे.

- नन्दि - संभवतः यह नागवंशीय शासक होगा.